आलोक मेहता

नाक से भारी नहीं होने दी नथ

भारतीय जनता पार्टी के भावी नेतृत्व का फैसला संघ ठोंक-बजाकर करेगा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने 1933 में संघ के घोषणापत्र में स्पष्ट लिखा था, 'संघचालक की आज्ञा का पालन स्वयंसेवकों द्वारा बिना किसी आगा-पीछा के होना अनुशासन एवं कार्य प्रगति के लिए आवश्यक है। 'नाक से भारी नथ' - इस स्थिति को संघ कभी उत्पन्न नहीं होने देगा। यही संघ का रहस्य है।'

अपने को संघ का स्वयंसेवक कहकर गौरवान्वित होने वाले अटल बिहारी वाजपेयी-लालकृष्ण आडवाणी, प्रमोद महाजन, वेंकैया नायडू ने क्या सत्ता में आने के बाद संघ के मूल घोषणापत्र को भी भुला दिया है? यदि नहीं तो क्या वे संघ से पूरी तरह संबंध विच्छेद कर देने की घोषणा कर सकते हैं? वे लाख चाहें, तब भी वे दूसरा विकल्प नहीं अपना सकते क्योंकि इस उम्र में उन्हें अपना दिल-दिमाग बदलना मुश्किल होगा। जब जीवन भर समाजवादियों और उदारवादियों का समर्थन लेने वाले जॉर्ज फर्नांडीस सर-संघचालक सुदर्शनजी के चरणों में और अयोध्या की गलियों में सत्ता की चाबी खोजते हैं, तब आडवाणी की वेंकैया चौकड़ी संघ के बिना अपने दम पर भाजपा को दो-तिहाई बहुमत लाने का सपना कैसे साकार कर सकेगी? इसलिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा लालकृष्ण आडवाणी को भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष पद से हटाने के मार्ग निर्देश का पालन तत्काल भले ही न हो रहा हो, उसकी अवहेलना असंभव सी लगती है। अंतिम वर्षों में आडवाणी समर्थक यह दावा करने लगे कि भाजपा के लिए आडवाणी का सही विकल्प देना भी कठिन होगा। इस तर्क के प्रत्युत्तर में संघ के एक वरिष्ठ प्रचारक ने पूर्व सरसंघचालक गुरु गोलवलकर द्वारा 23 जनवरी, 1970 को दिल्ली में स्वयंसेवकों को सुनाई गई कथा का उल्लेख किया। गुरुजी ने स्वयंसेवकों को बताया, 'एक ऊंट जा रहा था। उसकी नाक में बंधी हुई रस्सी मालिक ने हाथ से छोड़ दी। इसलिए रस्सी पीछे-पीछे घिसटती हुई जा रही थी। इसी समय निकट के एक बिल से चूहा निकलकर आया और उसने रस्सी का छोर पकड़ लिया। वह भी ऊंट के साथ चलने लगा। चलते-चलते वह ऊंट से बोला, तू इतना बड़ा है, फिर भी मेरी शक्ति तो देख। मैं तुझे खींचे ले जा रहा हूं। अब हमारा संगठन चल रहा है और मैं उसका एक छोर लेकर यदि अभिमान से कहूं कि मैं ही इसे चला रहा हूं तो यह चूहे की बुद्धि होगी, मेरी कदापि नहीं। इसलिए संगठन को चलाने का श्रेय लेने की कोई बात नहीं हो सकती।' जब गुरुजी उस समय अकेले श्रेय नहीं ले सकते थे तो आज संघ से निकला कोई व्यक्ति परिवार के ही एक संगठन को केवल अपने बल पर चला सकने का दावा कैसे कर सकता है? असल में आडवाणी और नायडू ने पिछले वर्षों के दौरान सत्ता में रहते हुए इतनी बड़ी संख्या में संघ के प्रचारकों, निष्ठावान स्वयंसेवकों, भाजपा के ईमानदार कार्यकर्ताओं और प्रादेशिक नेताओं को अपमानित तथा नाराज किया है कि दोनों संगठनों के आंगन में रखे हवन-कुंड की आग धू-धू करती हुई ऊंची उठती गई है। सुदर्शन या मोहन भागवत के धैर्य का बांध बहुत जल्दी नहीं टूटा है। जिन्ना पर वक्तव्य तो एक बहाना या संयोग मात्र है। आडवाणी-नायडू राज में मुरली मनोहर जोशी, शांता कुमार, प्यारेलाल खंडेलवाल, बंगारू लक्ष्मण, केशुभाई पटेल, उमा भारती, यशवंत सिन्हा, बाबूलाल मरांडी जैसे कई-कई नेताओं को निरंतर अपमान झेलना पड़ा। संघ इस बात से भी विचलित हुआ कि सत्ता के चक्कर में भाजपा के अधिकांश नेता बेलगाम हो गए। अयोध्या का राम मंदिर, समान नागरिक आचार संहिता, राष्ट्रभाषा हिंदी को सही स्थान दिलाने, धारा 370 खत्म करने के कार्यक्रमों का क्रियान्वयन गठबंधन के चक्कर में भुलाया गया लेकिन विश्व हिंदू परिषद और संघ के वरिष्ठ नेताओं से दूरी के साथ कांग्रेसी शैली में अल्पसंख्यकों को रिझाने की कोशिशों को संघ ने बिल्कुल पसंद नहीं किया। जब पानी सिर से ऊपर बहने लगा, तब संघ नेतृत्व को हस्तक्षेप करना पड़ा। संघ नेतृत्व संगठन में चरित्र और अनुशासन को सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानता रहा है। संघ के नेता यह चाहते हैं कि भाजपा कांग्रेस की प्रतिलिपि बनने की कोशिश न करे। उसका नेतृत्व ऐसे व्यक्तियों के हाथ में हो जो स्वयं प्राणवान एवं संघर्षशील हों, जिनके विचार स्पष्ट हों, दृढ़ निष्ठा हो और जिनका वैयक्तिक तथा सार्वजनिक चरित्र उज्ज्वल हो।

मजेदार बात यह है कि संघ के सिद्धांतों और नेतृत्व के प्रति सार्वजनिक रूप से सम्मान व्यक्त करने वाले भाजपा के कई बड़े नेता सुविधावादी राजनीति से निकलने को तैयार नहीं हैं। वे वोट के लिए पार्टी में हिंदुत्व का एजेंडा भी स्वीकार कर रहे हैं लेकिन अन्य दलों का साथ लेने के लिए एनडीए की झोली में 'उदारवादी भाजपा' की प्रतिमा डाले रखना चाहते हैं। आडवाणी से जुड़े चमत्कारों में विश्वास रखने वाले कुछ सहयोगियों को बिहार चुनाव और भाजपा के रजत-जयंती समारोहों तक अभयदान मिलने की स्थिति में केंद्र सरकार में भी भारी उलटफेर की उम्मीद दिख रही है। वे अब तक यह बात गले नहीं उतार पा रहे हैं कि भाजपा अगले तीन-चार वर्ष सत्ता से बाहर रह सकती है और आडवाणी के प्रधानमंत्री बनने का सपना जल्दी पूरा नहीं होगा। यही कारण है कि संघ के भारी दबाव के बावजूद वे आडवाणी को दोनों पदों पर बैठाए रखना चाहते हैं। दूसरी तरफ कांग्रेस की तरह भाजपा में उत्तराधिकारी को लेकर व्यक्तियों के टकराव के बड़े खतरे हैं। खेमा चाहे अटल समर्थकों का हो या आडवाणी का, दूसरी पंक्ति का हर नेता अपने साथ खड़े नेता को अध्यक्ष पद पर देखने को तैयार नहीं है। जसवंत सिंह, मुरली मनोहर जोशी, नरेंद्र मोदी, राजनाथ सिंह, सुषमा स्वराज, उमा भारती, अरुण जेटली, प्रमोद महाजन, बाल आप्टे, गोविंदाचार्य, यशवंत सिन्हा जैसे नेता अध्यक्ष पद की दौड़ में शामिल हैं। संघ इस बार ठोंक-बजाकर फैसला करने के मूड में है। आडवाणी के पाला बदलकर 'उदार' मुखौटा लगाने की कल्पना उसने कभी नहीं की थी। उसे इस बात का संतोष अवश्य है कि भारतीय राजनीति में कांग्रेस के पास अच्छे नेताओं की भारी कमी दिखने लगी है और राष्ट्रीय विकल्प के रूप में उसके पुराने स्वयंसेवक ही अग्रिम पंक्ति में दिख रहे हैं। भाजपा और विश्व हिंदू परिषद को स्वतंत्र इकाइयों के रूप में दिखाने के बावजूद उसका लक्ष्य यही है कि डॉ. हेडगेवार के सपनों का हिंदू राष्ट्र बनाने में उनके स्वयंसेवक सब कुछ दांव पर लगा दें। सवाल यह है कि हिंदुत्व, हिंदू राष्ट्र, समान नागरिक आचार संहिता के कट्टरपंथी कार्यक्रमों के भरोसे क्या भाजपा सचमुच अपने बल पर केंद्र में सत्ता में आ सकेगी? फिर वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में किसी कट्टरपंथी पार्टी की सरकार के बल पर भारत की पहचान कितनी विकृत होगी? संघ-भाजपा में हो रही खींचतान और बिखराव का अगला दौर राहत देने वाला होगा अथवा समाज और राजनीति को अधिक जहरीला बना देगा? उत्तर राजनीतिक व्यवस्था से जुड़े लोगों को ही खोजने होंगे। ●

> 'अब हमारा संगठन चल रहा है और मैं उसका एक छोर लेकर यदि अभिमान से कहूं कि मैं ही इसे चला रहा हूं तो यह चूहे की बुद्धि होगी, मेरी कदापि नहीं।'

जय श्री राम वन्दे मातरम्

इन्द्रप्रस्थ विश्व हिन्दू परिषद

INDRAPRASTHA VISHWA HINDU PARISHAD (REGD.), DELHI
झंडेवाला देवी मंदिर, नई दिल्ली–110055
दूरभाष– 9810949109, 23679333, 23559150, फैक्स– 23541678

12.07.2005

प्रेस विज्ञप्ति

इन्द्रप्रस्थ विहिप की साधारण सभा की बैठक

कश्मीर से हिन्दुओं का पलायन, पूर्वोत्तर राज्यों की खतरनाक स्थिति, तथा ऊपर से सरकार की मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति देश को आज एक और विभाजन की ओर ले जा रही है। विहिप के केन्द्रिय मंत्री श्री विनायक राव देशपाण्डे ने इन्द्रप्रस्थ विहिप की प्रान्त साधारण सभा की बैठक में बोलते हुए कहा कि जम्मू कश्मीर में हिन्दुओं पर बढ़ते अत्याचार के चलते ही आज उसके तीन जिले पुंछ, राजौरी व डोडा मुस्लिम बाहुल्य हो चुके हैं।

विहिप के प्रान्त मीडिया प्रमुख श्री विनोद बंसल ने बैठक की जानकारी देते हुए बताया कि लाजपत नगर III के श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर में सम्पन्न हुई इस बैठक में उपस्थित दो सौ कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए प्रान्त महामंत्री श्री राष्ट्रप्रकाश ने गत छः मास की संगठन की उपलब्धियों व आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी। प्रान्त के विविध आयामों के प्रमुखों तथा ग्यारह विभागों के विभाग मंत्रियों ने भी अपना–अपना वृत निवेदन किया। बजरंगदल के प्रान्त संयोजक श्री अशोक कपूर ने बजरंग दल के विशेष भर्ती अभियान तथा अगस्त के प्रथम सप्ताह में एक लाख बजरंगीयों को बूढ़ा अमरनाथ भेजने की योजना की भी जानकारी दी। उन्होंने बूढ़ा अमरनाथ के पौराणिक महत्व के बारे में भी बताया।

बैठक के अन्त में प्रान्त अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश सिंघल ने कार्यकर्ताओं का आव्हान करते हुए कहा कि यद्यपि आज देश में चहुँ ओर विधर्मी शक्तियां हमारे विरूद्ध खड़ी हैं तो भी भगवान श्रीराम के काम से हमें कोई रोक नहीं सकता है। श्री सिंहल ने कार्यकर्ताओं का जिज्ञासा समाधान भी किया।

विनोद कुमार बंसल
(प्रान्त मीडिया प्रमुख)
9810949109